उच्चावच निरूपण

→ धरातल का वास्तविक विन्यास या समरूपण उच्चावच कहलाता है।
किसी क्षेत्र के धरातल का समरूपण या उच्चावच उस क्षेत्र के स्थल रूपो के आकार पर निर्भर करता है।

→ स्थल रूप अनेक प्रकार के होते है - जैसे - पर्वत, पठार, मैदान, महासागर पर्वत स्कंद, कगार गार्ज, भृग आदि धरातल पर ये सभी स्थल रूप त्रिविम आकृति के रूप मे दिखाई देते है।

→ अर्थात् प्रत्येक स्थल रूप मे लंबाई, चौड़ाई तथा ऊँचाई - निचाई तीनो विद्यमान रहती है।

उच्चावच निरूपण की विधियाँ

* मानचित्र पर उच्चावच प्रदर्शित करने की विधियो को तीन वर्गो मे विभाजित किया जा सकता है।

उच्चावच निरूपण की विधियां

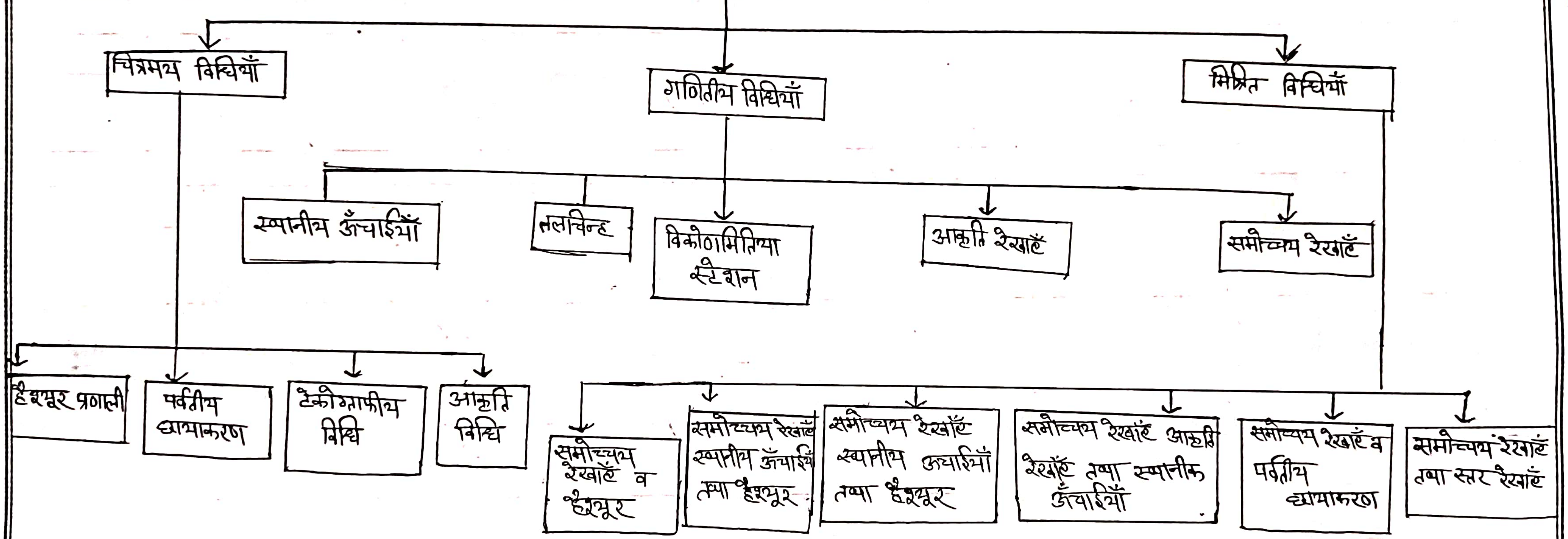

हैश्यूर प्रणाली (Hachure System)

परिभाषा :-

महीन एवं पास - पास खींची गई खण्डित रेखाओं की सहायता से पर्वतीय छायाकरण करके, मानचित्र में उच्चावच प्रदर्शित करने की विधि हैश्यूर प्रणाली कहलाती है।

- हैश्यूर बनाने के मूल नियमों का लेहमान नामक एक ऑस्ट्रियन सैन्य अधिकारी ने अठारहवीं शताब्दी के अंतिम दिनों में प्रतिपादन किया था। इस विधि से ऊँचे भागों से नीचे भागों की ओर जल बहने की दिशा में समान्तर किंतु खण्डित रेखाएँ बनाकर मानचित्र में उच्चावच का प्रदर्शन किया जाता है। हैश्यूर प्रणाली में दो रेखाओं की मोटाई को गणितीय विधि के द्वारा निश्चित किया जा सकता है। 45° से अधिक ढाल वाले भागों को मानचित्र में पूर्णतः काला कर देते हैं। इस प्रकार धरातल पर जो भाग जितना अधिक ढाल वाला होगा, हैश्यूर प्रणाली से बने मानचित्र में वह भाग जितना अधिक ढाल वाला होगा, उतना ही अधिक भारी या काला प्रतीत होगा।

* **गुण :-**

हैश्यूर प्रणाली के निम्नलिखित गुण हैं :-

1) सही ढंग से खींची गई हैश्यूर रेखाओं से ऊँचाई - नीचाई का प्रदर्शन इतना स्पष्ट होता है कि साधारण से साधारण व्यक्ति भी मानचित्र देखकर उच्चावच संबंधी विशिष्ट लक्षणों के बारे में सामान्य जानकारी प्राप्त कर सकता है।

2) समतल क्षेत्रों के उच्चावच को मानचित्र में प्रदर्शित करने के लिये यह विधि विशेष उपयोगी है।

3) समोच्चय रेखी मानचित्र में समोच्चय रेखांतराल अधिक होने के कारण छोटे - छोटे स्थलाकृतिक लक्षण जैसे - नदी-वेदिकाएँ छोटी कटक तथा ढाल, रंध्र आदि प्रायः ओझल हो जाते हैं परंतु हैश्यूर द्वारा इन लक्षणों को स्पष्ट रूप से दिखलाया जा सकता है।

* **दोष :-**

हैश्यूर विधि में निम्नलिखित दोष है।

1) यद्यपि इस विधि से ढाल की दशाओं का प्रभावशील ढंग से निरूपण होता है परन्तु हैश्यूर मानचित्र से भूआकृतियों की समुद्र तल से ऊँचाई का ज्ञान नहीं होता।

2) यह विधि केवल बड़ी मापनी पर बने मानचित्रों के लिये उपयुक्त है।

3) हैश्यूर रेखाओं के द्वारा उर्मिल भूमि तथा पहाड़ी क्षेत्रों के उच्चावच का स्पष्ट प्रदर्शन नहीं होता।

4) सही ढंग से हैश्यूर बनाने के लिए पर्याप्त अभ्यास एवं भू आकृतियों के संबंध में यथेष्ट ज्ञान होना आवश्यक है अतः इस विधि का प्रयोग केवल अनुभवी मानचित्रकारों तक ही सीमित है।

HACHURE

पर्वतीय छायाकरण (Hill Shading)

पर्वतीय छायाकरण को प्लैस्टिक छायाकरण भी कहते हैं। इस विधि से बनाया गया मानचित्र किसी उच्चावच प्रतिरूप का ऊपर की ओर से लिया गया फोटोग्राफ सा प्रतीत होता है।
पर्वतीय छायाकरण के द्वारा उच्चावच दिखाने के लिए धरातल पर भू-आकृतियों पर ऊपर से अथवा उत्तरी पश्चिमी कोने की ओर से प्रकाश पड़ने की कल्पना की जाती है।
इस प्रकार अंधेरे में पड़ने वाले भागों में छायाकरण कर देते हैं। तथा प्रकाश-युक्त भागों को खाली छोड़ दिया जाता है। यदि भू-आकृतियों पर ऊपर की ओर से प्रकाश पड़ने की कल्पना की गई है। तो स्पष्ट है ढलवाँ भागों में अंधकार होगा तथा समतल भाग प्रकाश-युक्त होंगे। अतः इस दशा में जो भाग जितना अधिक ढलवाँ होगा उसमें उतना ही भारी छायाकरण किया जायेगा जबकि कटक-शीर्ष, पठार, घाटी-तलियाँ तथा मैदानी भाग प्रकाश-युक्त होने के कारण मानचित्र में छायाकरण से वंचित रखे जायेंगे।

* **गुण** :- इस विधि के निम्नलिखित गुण हैं :-

1) पर्वतीय छायाकरण के द्वारा किसी क्षेत्र के उच्चावच संबंधी सामान्य लक्षणों को स्पष्ट किया जा सकता है।

2) यह विधि छोटी मापनी पर बने मानचित्रों में उच्चावच प्रदर्शित करने के लिये विशेष रूप से उपयोगी है।

HILL SHADING

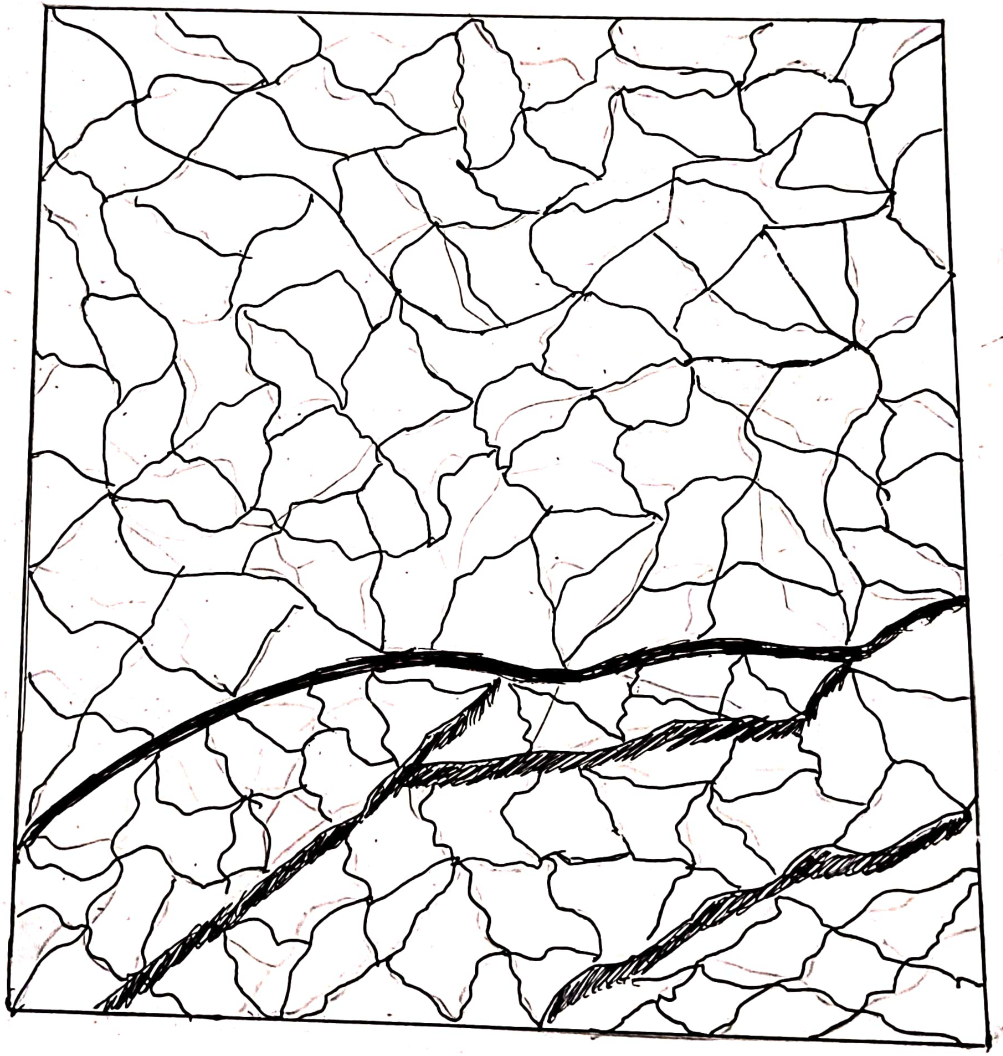

* स्थानिक ऊँचाइयाँ :— (Spot heights)

मानचित्र में किसी स्थान विशेष की स्थिति एवं समुद्र तल से ऊँचाई प्रदर्शित करने वाले बिन्दु को स्थानिक ऊँचाई की संज्ञा दी जाती है इस विधि में बिंदुओं के द्वारा मानचित्र में विभिन्न स्थानों की स्थितियाँ प्रदर्शित की जाती हैं तथा प्रत्येक बिंदु के ~~समक्ष~~ समक्ष संबंधित स्थान की फीट या मीटर में समुद्र तल से ऊँचाई लिख देते हैं।

स्थानिक ऊँचाई के द्वारा किसी स्थान की समुद्र तल से ऊँचाई का बोध होता है परन्तु मानचित्र में स्थानिक ऊँचाइयों को देखकर संबंधित क्षेत्र के सामान्य उच्चावच प्रतिरूप को समझना कठिन है। अतः इस विधि को उच्चावच प्रदर्शित करने वाली अन्य विधियों के साथ प्रयोग करना बहुत लाभदायक होता है।

* तल चिन्ह — (Bench Mark)

भवनों की दीवारों, नदियों एवं नहरों के पुलों तथा लोहे के खम्भों आदि पर वास्तविक सर्वेक्षण के अनुसार अंकित समुद्र तल से ऊँचाई प्रदर्शित करने वाले चिन्हों को तल चिन्ह नाम से संबोधित किया जाता है। तल चिन्ह तथा स्थानिक ऊँचाई में अंतर समझ लेना आवश्यक है। स्थानिक ऊँचाई के द्वारा मानचित्र पर धरातल के किसी स्थान की समुद्र तल से ऊँचाई का बोध होता है जबकि तल चिन्ह दीवार आदि पर अंकित किसी चिन्ह की समुद्र तल से ऊँचाई कहलाते हैं। मानचित्र में किसी तल चिन्ह की स्थिति को B.M अक्षरों द्वारा प्रदर्शित करते हैं ~~मानचित्र में~~ किसी तथा इन अक्षरों के समीप उस चिन्ह की समुद्र तल से फीट या मीटर में ऊँचाई लिख दी जाती है।

* त्रिकोणमितिय स्टेशन (Trigonometrical Stations)

त्रिकोणमितिय स्टेशन का तात्पर्य मानचित्र पर अंकित उन स्थानों से है जहाँ त्रिभुजन विधि के द्वारा सर्वेक्षण करते समय कोण मापे गये थे। त्रिभुजन विधि मे किसी क्षेत्र को त्रिभुजो में विभाजित करके सर्वेक्षण किया जाता है। मानचित्र मे त्रिकोणमितिय स्टेशन की स्थिति को एक त्रिभुज के द्वारा प्रदर्शित करते है। तथा इस त्रिभुज के समीप उस स्टेशन की धरातल पर समुद्र तल से ऊँचाई लिख दी जाती है।

* आकृति रेखाएँ (Form lines)

- मानचित्र में समोच्च रेखाओ के मध्य खीची गई अनुमानित समोच्च रेखाएँ आकृति रेखाएँ कहलाती है।
- समोच्च रेखाओ तथा आकृति रेखाओ मे मुख्य अंतर यह है कि समोच्च रेखाओ का अंतर्वेशन सर्वेक्षण के द्वारा निर्धारित स्थानीक ऊँचाइयो के अनुसार किया जाता है जबकि आकृति रेखाओ को किसी स्थलाकृतिक लक्षण के क्षेत्र मे देखे गये रूप के अनुसार अंतर्वेशित करते है।
- अपेक्षाकृत निम्न उच्चावच वाले प्रदेशो के बड़े समोच्च रेखांतराल पर बने समोच्च रेखी मानचित्र मे छोटे - छोटे स्थलाकृतिक लक्षणो को स्पष्ट करने के लिये आकृति रेखाएँ विशेष रूप से उपयोगी होती है।

Page No. : ____________ Date: ____________

स्थानीक ऊँचाई, तल चिन्ह, तथा त्रिकोणमितीय स्टेशन

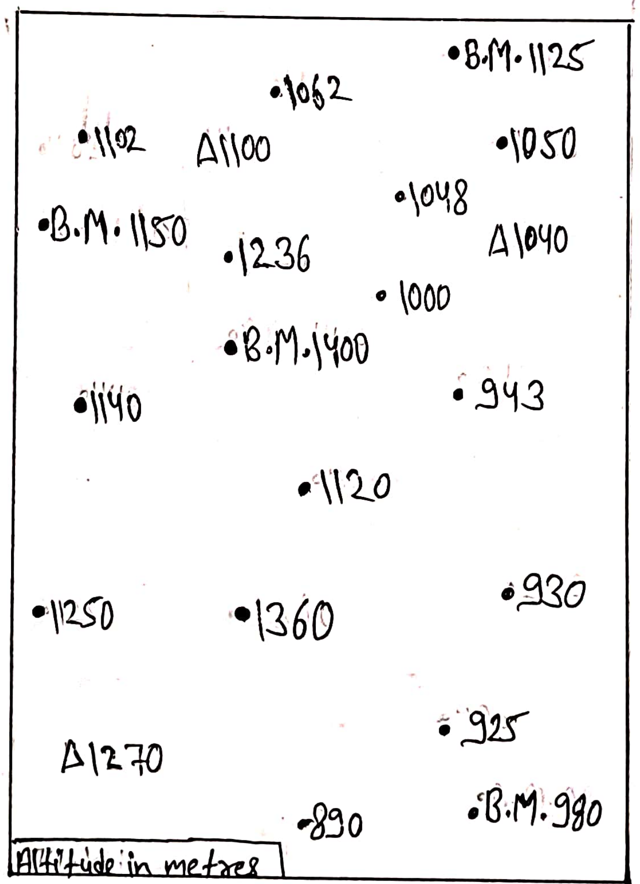

समोच्च रेखाएँ (Contours)

समोच्च रेखाओ की सहायता से मानचित्र मे उच्चावच प्रदर्शित करने की ~~एक मानक~~ विधि को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। यह उच्चावच के निरूपण की एक मानक विधि है जिस पर उच्चावच निरूपण की कई अन्य महत्वपूर्ण विधियाँ आधारित है। समोच्च रेखाएँ मानचित्र मे सर्वेक्षण द्वारा निर्धारित स्थानिक ऊँचाइयो के अंतर्वेशन से बनायी जाती है। अतः समोच्च रेखाओ के द्वारा मानचित्र मे समुद्र तल से धरातल के समान ऊँचाई वाले स्थानो का प्रदर्शन है। सरल शब्दो मे धरातल पर समुद्र तल से समान ऊँचाई वाले समीपस्थ बिन्दुओ को जोड़ने वाली कल्पित रेखाएँ समोच्च रेखाएँ कहलाती है।

समोच्च रेखी मानचित्र में किन्ही दो उत्तरोत्तर समोच्च रेखाओ के मानो का अंतर समोच्च रेखांतराल कहलाता है। मानचित्र में साधारणतया समान समोच्च रेखांतराल ~~कहलाता~~ है पर समोच्च मानचित्र मे रेखाएँ खीची जाती है, परन्तु कभी-कभी परिवर्तनशील समोच्च रेखातराल का भी प्रयोग किया जाता है, उदाहरणार्थ, पर्वतीय क्षेत्रो के समोच्च रेखी मानचित्र मे एक निश्चित ऊँचाई के पश्चात् समोच्च रेखातराल मे कभी-कभी वृद्धि कर दी जाती है। कुछ विद्वान केवल छोटी मापनी पर बने मानचित्रो मे ही समोच्च रेखातराल के परिवर्तन को उचित मानते है।

CONTOURS

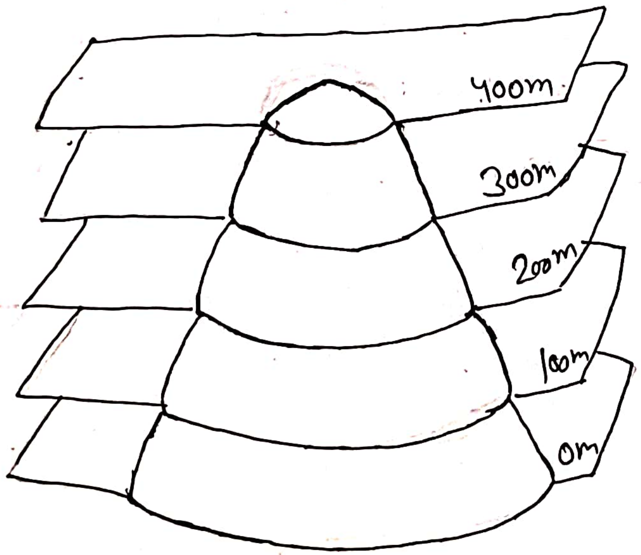

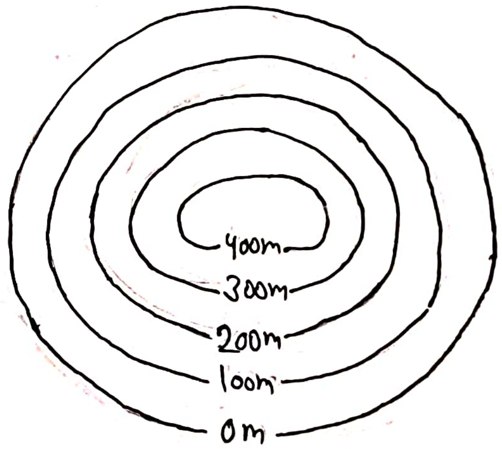

समोच्च रेखा अंतर्वेशन
(Interpolation of contours)

मानचित्र में स्थानिक ऊँचाइयों की सहायता से समोच्च रेखाएँ बनाने की विधि समोच्च रेखा अंतर्वेशन कहलाती है।

इस विधि के द्वारा समोच्च रेखाएँ बनाने का कार्य निम्नलिखित चरणों मे पूर्ण किया जाता है।

1) सर्वप्रथम, थियोडोलाइट, डम्पी लेविल अथवा क्लाइनोमीटर आदि सर्वेक्षण यंत्रो की सहायता से धरातल पर विभिन्न स्थानों की समुद्र तल से ऊँचाई ज्ञात की जाती है और उसके बाद इन स्थानों को प्लेन टेबुल आदि की सहायता से मानचित्र मे यथास्थान स्थानिक ऊँचाइयो के रूप मे अंकित करते है। स्मरण रहे कि स्थानिक ऊँचाइयो की संख्या जितनी अधिक होगी उतनी ही समोच्च रेखाएँ अधिक शुद्ध होगी।

2) स्थानिक ऊँचाइयाँ अंकित कर देने के पश्चात उनके आधार पर ऊँचाई परास ज्ञात करते है अर्थात यह देखा जाता है कि सबसे कम तथा सबसे अधिक ऊँचाई दिखलाने वाले बिंदुओ के मान क्या है।

3) स्थानिक ऊँचाइयो के द्वारा प्रदर्शित ऊँचाई - परास को दृष्टि मे रखते हुए आवश्यकतानुसार समोच्च रेखांतराल निश्चित किया जाता है समोच्च रेखांतराल का मान सदैव शून्यान्त अंको जैसे 10, 20, 30, 50 तथा 100 मीटर आदि मे होना चाहिए।

4) समोच्च रेखांतराल निश्चित कर लेने के पश्चात मानचित्र में खींची जाने वाली समोच्च रेखाओं के मान निर्धारित करते है, नियमानुसार समोच्च रेखाओ के मान भी शून्यान्त अंको में होने चाहिए अतः प्रथम समोच्च रेखा का मान ज्ञात करने के लिये सबसे नीची स्थानिक ऊँचाई के मान को शून्यान्त अंको मे

बदल देते है।

5| इस चित्र मे प्रदर्शित मानचित्र मे अंकित कुल २२ स्थानिक ऊँचाइयो में निम्नतम व उच्चतम स्थानिक ऊँचाइयो के मान क्रमश: 980 तथा 1640 मीटर है। अत: चित्र में प्रदर्शित ऊँचाई - परास का मान 1640 − 980 = 660 मीटर हुआ। यदि समोच्च रेखांतराल 100 मीटर हो तो स्पष्ट है कि मानचित्र में 1000, 1100, 1200, 1300, 1400, 1500 तथा 1600 मीटर वाली सात समोच्च रेखाएँ बनायी जा सकती है।

Page No. : ______ Date: ______

समोच्च रेखा अंतर्वेशन

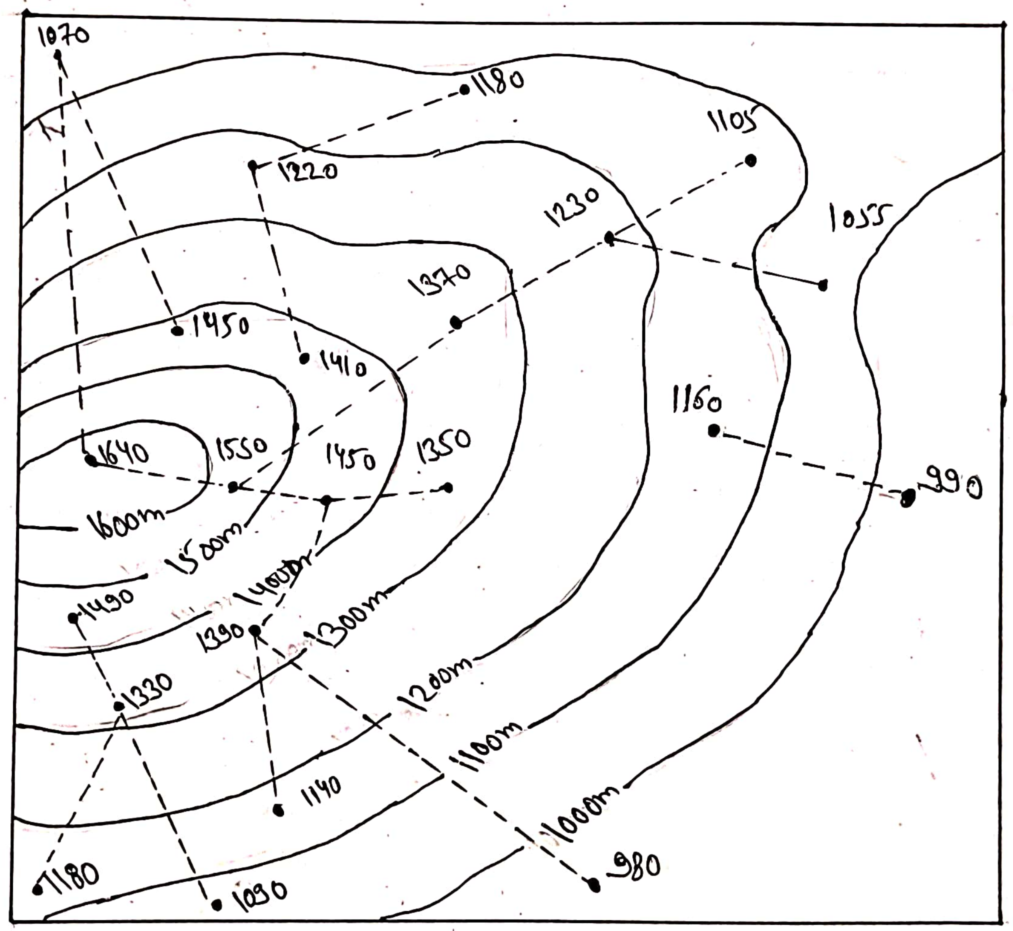

शंक्वाकार पहाड़ी (Conical Hill)

→ शंकु की आकृति मे ऊँचा उठा हुआ कोई भू-भाग जिसकी ऊँचाई समीपवर्ती क्षेत्र से 1000 m से कम हो, शंक्वाकार पहाड़ी कहलाता है।

→ ज्वालामुखी शंकु इनका विशिष्ट उदाहरण है शंक्वाकार पहाड़ी को समान दूरी के अंतर से खींची गई संकेन्द्री समोच्च रेखाओ से प्रदर्शित करते हैं।

पठार (Plateau)

समीपवर्ती क्षेत्र से ऊँचा उठा हुआ वह भू-भाग जिसका शिखर क्षेत्र लगभग समतल हो, पठार कहलाता है।

→ पठार की समुद्र तल से ऊँचाई केवल कुछ सौ मीटर से 5000 मीटर (तिब्बत का पठार) तक हो सकती है। समोच्च रेखाओ के द्वारा पठार दिखलाने के लिये किनारे की ओर समोच्च रेखाएँ पास-पास बनायी जाती हैं।
जबकि मध्यवर्ती भाग समोच्च रेखाओ से लगभग रहित रहता है।

Page No. : ____________ Date: ____________

CONICAL HILL

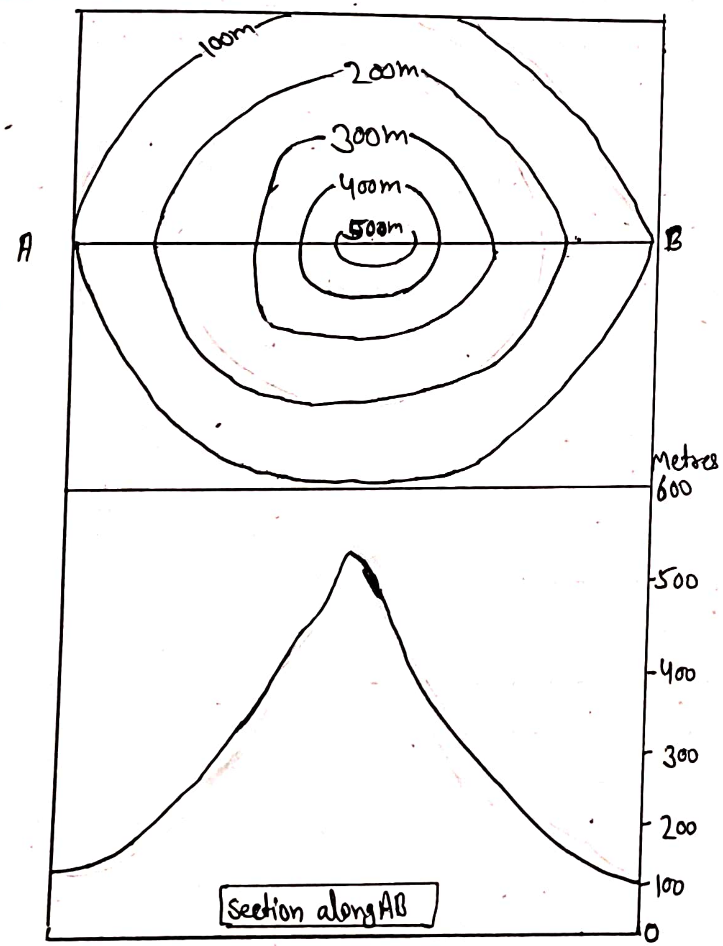

PLATEAU

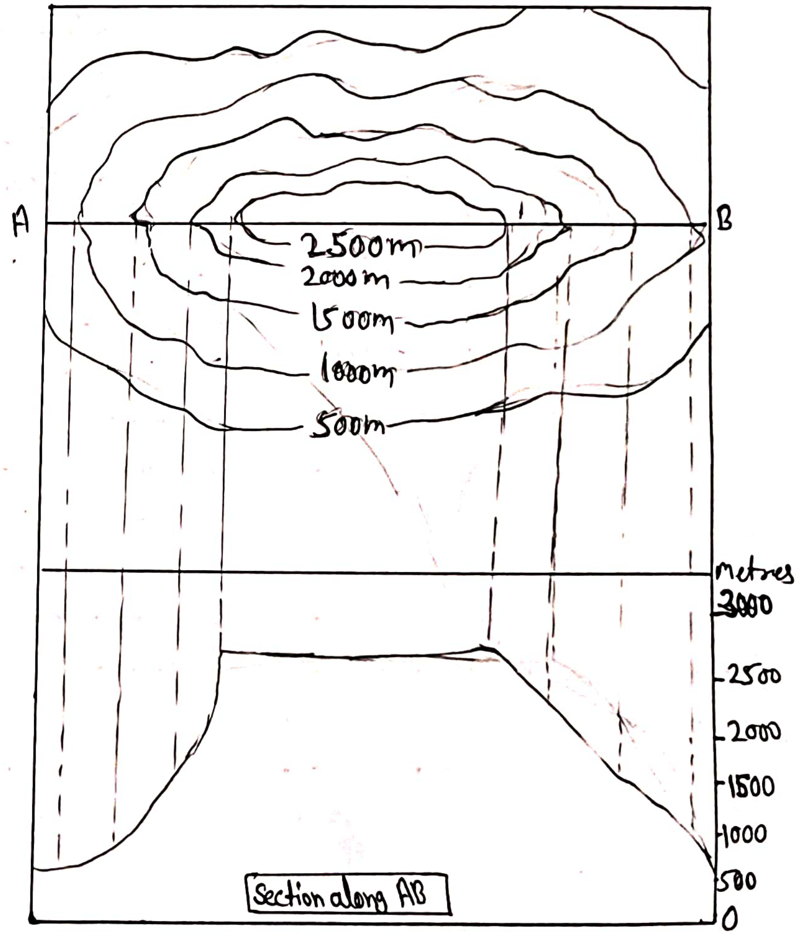

अवतल ढाल व उत्तल ढाल

(Concave slope & Convex slope)

* **अवतल ढाल :-** जिन ढालो के नीचले भागो मे मंद ढाल तथा ऊपरी भागो मे तेज ढाल होता है उन्हे अवतल ढाल की संज्ञा देते है।

→ ऐसे ढालो को प्रदर्शित करने के लिये निचले भागो मे स्थित कम मान वाली समोच्च रेखाओ को दूर - दूर तथा ऊपर की ओर स्थित अधिक मान वाली समोच्च रेखाओ को अपेक्षाकृत पास - पास बनाया जाता है।

* **उत्तल ढाल :-** उत्तल ढाल अवतल ढाल के बिल्कुल विपरित होता है। अर्थात इसके निचले भागो में ढाल तेज तथा ऊपरी भागो मे ढाल मंद होता है।

ऐसे ढालो को दिखलाने वाली समोच्च रेखाएँ निचले भागो में पास - पास तथा ऊपरी भागो मे दूर - दूर बनी होती है।

Page No. : ______ Date: ______

CONCOVE SLOPE

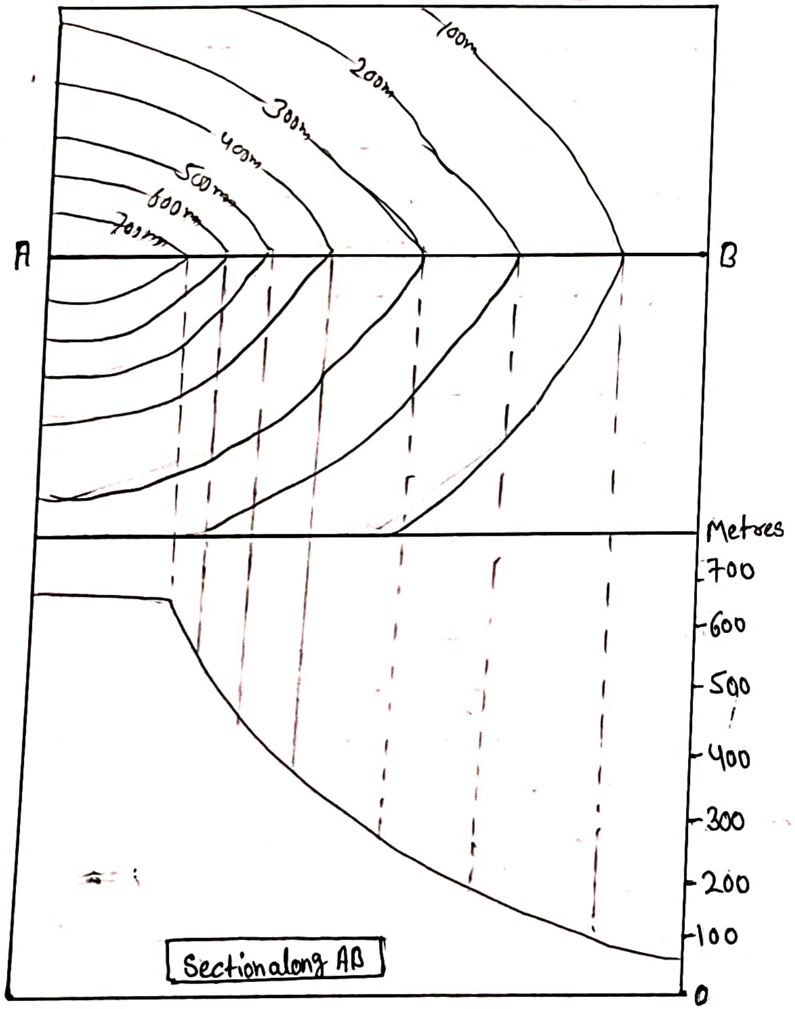

CONVEX SLOPE

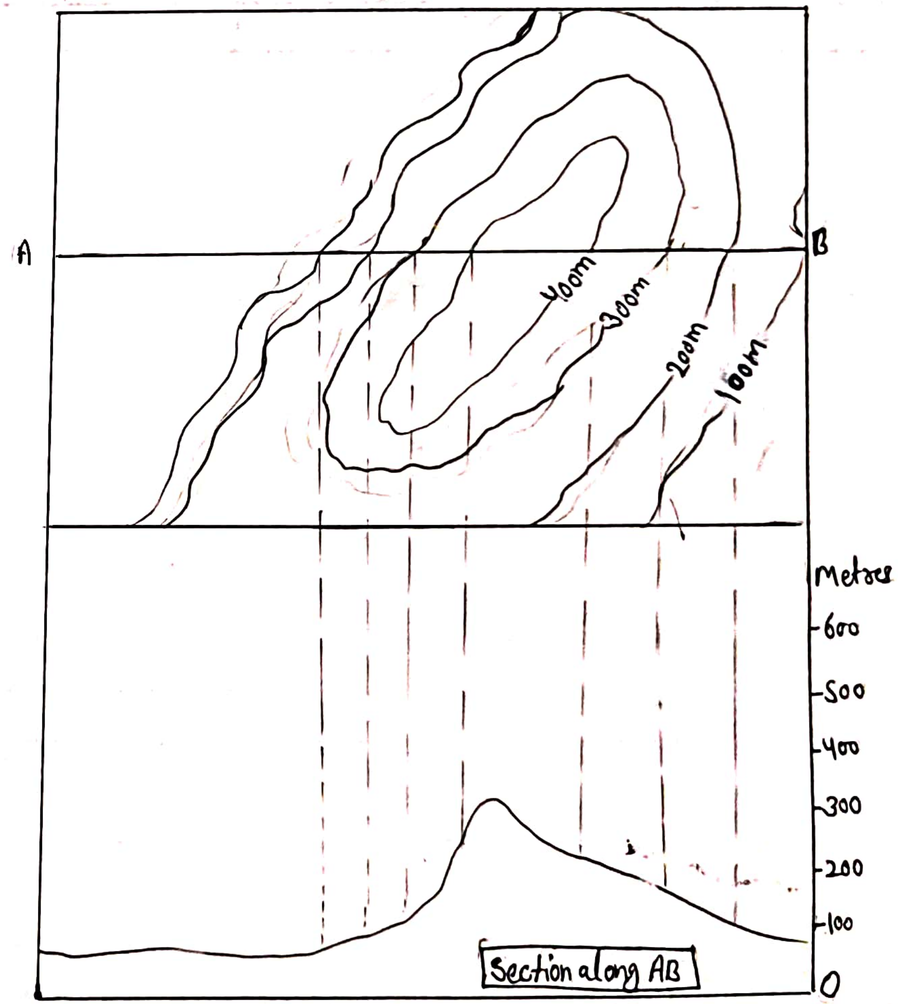

Teacher's Signature

U आकार की घाटी
(U-Shaped Valley)

* U- आकार की घाटी –
हिमनद (glacier) के द्वारा निर्मित घाटी को U- रूप की घाटी कहते हैं।

→ क्योंकि इसकी आकृति अंग्रेजी भाषा के 'U' अक्षर से मिलती-जुलती होती है। हिमनदीय घाटी के पार्श्व खड़े एवं तली चौड़ी तथा सपाट होती है। इन घाटियों को दिखलाने के लिये उल्टे 'U' की आकृति में समोच्च रेखाएँ खींची जाती हैं।

* V- आकार की घाटी –
V- आकार की घाटी का निर्माण नदी द्वारा अपनी ~~कुमार~~ युवावस्था में किया जाता है जिसमे से होकर नदी बहती है इस घाटी को V- आकार में ही समोच्च रेखाओ द्वारा प्रदर्शित किया जाता है।
जिसमे बनने वाला समोच्च रेखाओ का V उल्टा होता है अर्थात् शीर्ष उच्च भूमि की ओर तथा मुंह निम्न भूमि की ओर होता है।

U- SHAPED VALLEY

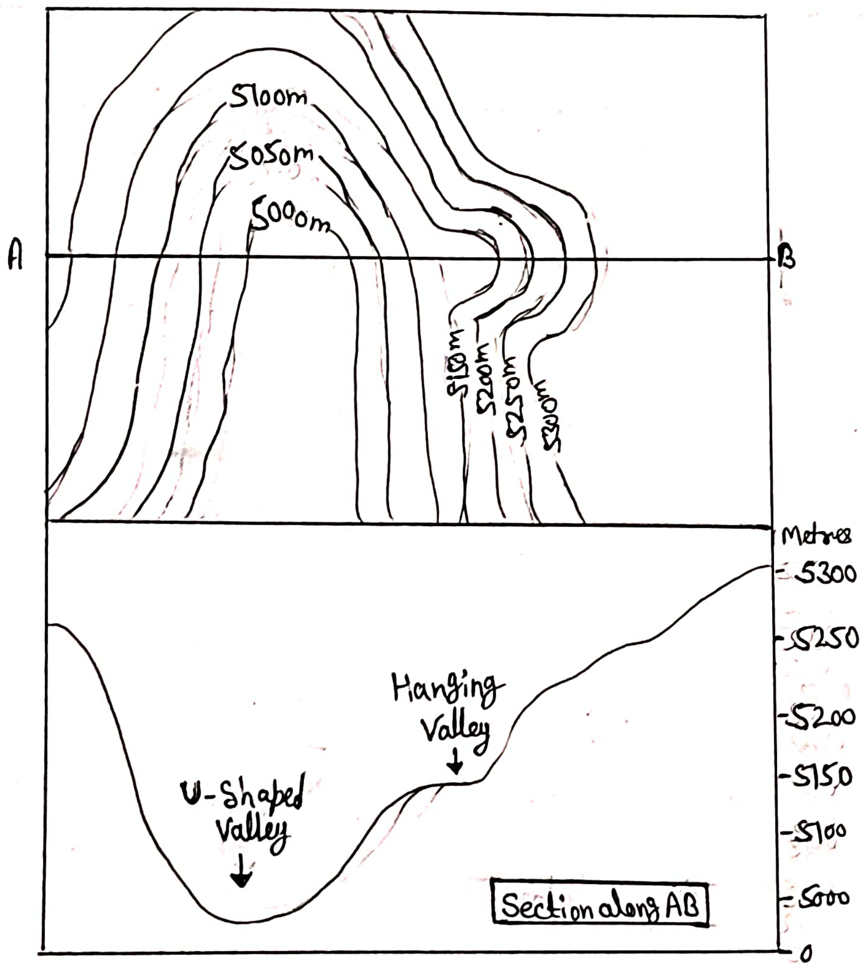

V- SHAPED VALLEY

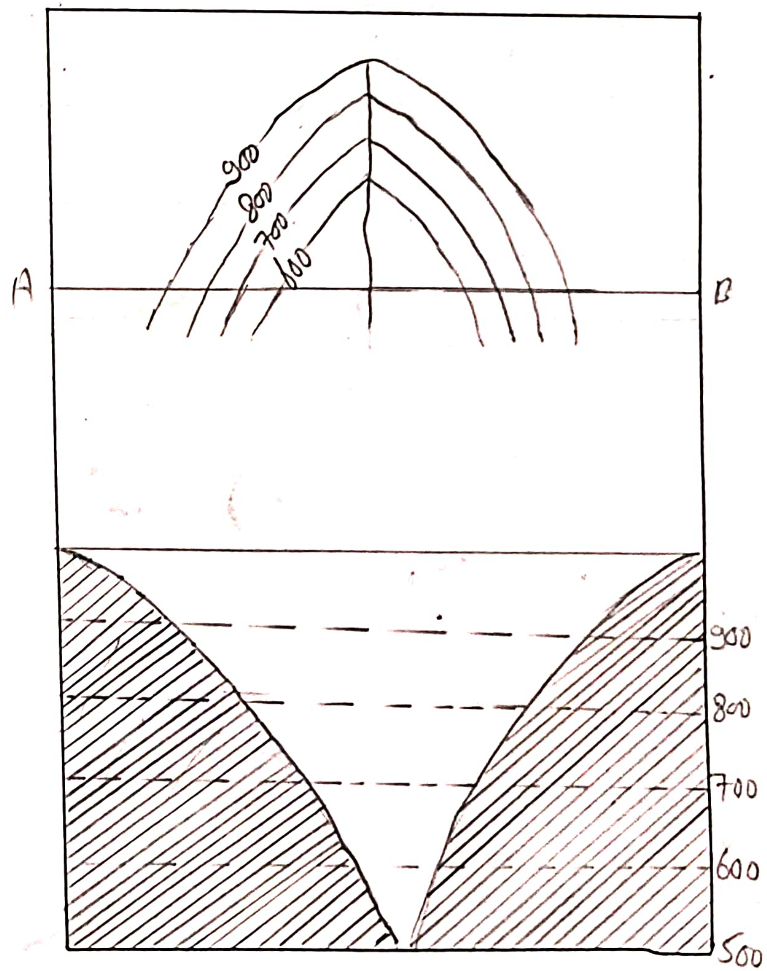

कगार , भृगु
(Escarpment , Cliff)

* **कगार** –
किसी कटक अथवा पहाड़ी का खड़ा या समान रूप से तेज ढाल वाला किनारा कहलाता है।

→ कगार की उत्पत्ति चट्टानों में भ्रंश उत्पन्न होने अथवा चट्टानों की झुकी हुई परतों के अपरदन से होती है।

→ कगार दिखलाने वाली समोच्च रेखाएँ अपेक्षाकृत पास - पास बनी होती हैं।

* **भृगु** :–
किसी समुद्र तट के किनारे स्थित चट्टान का लम्बवत् ढाल वाला पार्श्व भृगु कहलाता है।

→ भृगु को भिन्न भिन्न मान वाली समोच्च रेखाओं को एक दूसरे के ऊपर खींचकर प्रदर्शित किया जाता है।

Page No. : ____________ Date: ____________

ESCARPMENT

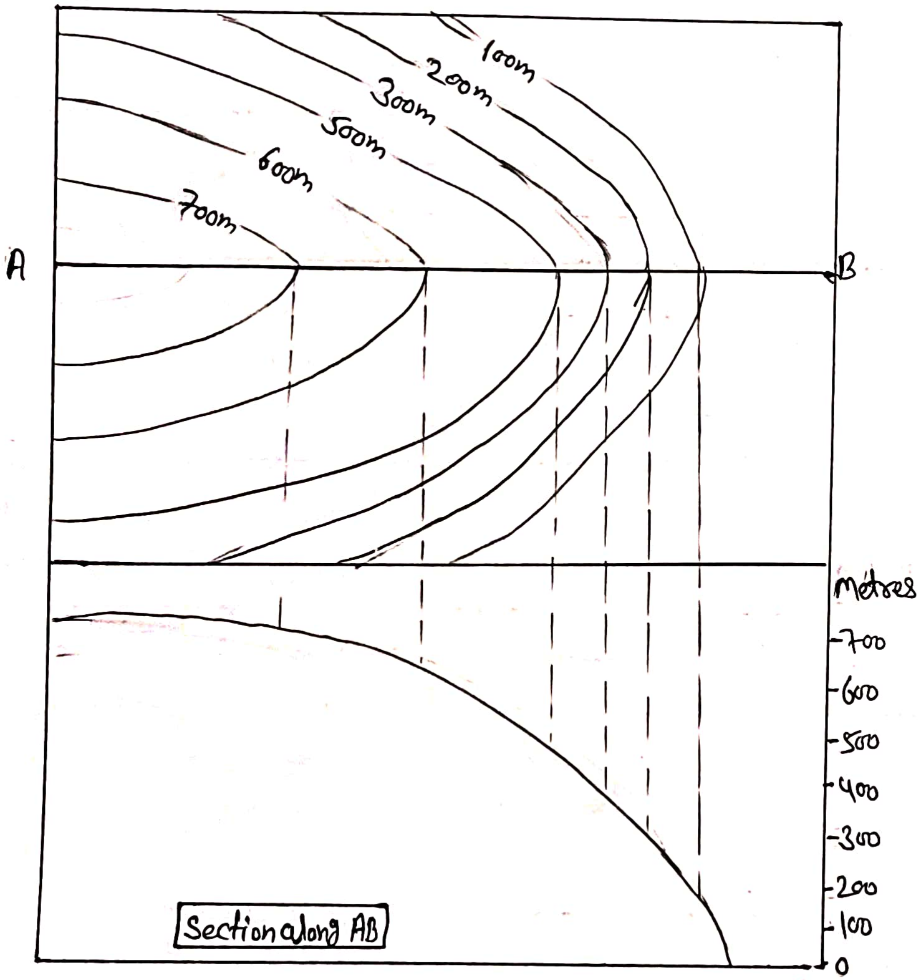

CLIFF

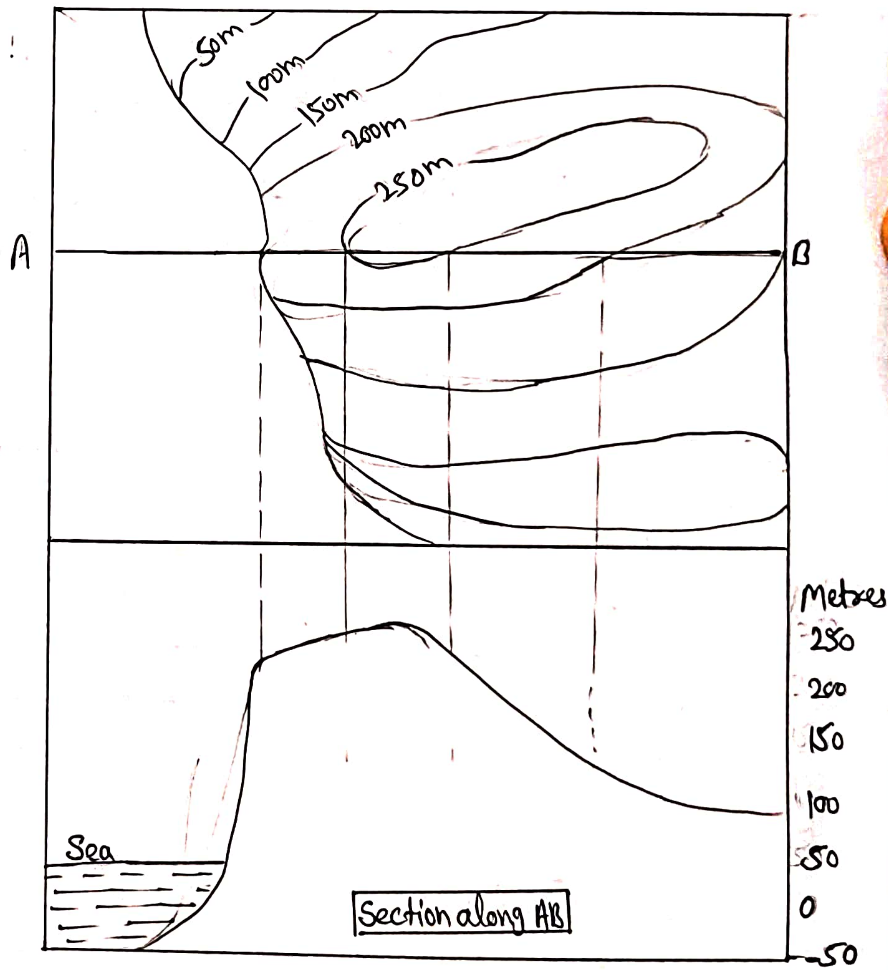

जलप्रपात व रियातट
(Waterfall & Ria Coast)

* **जलप्रपात** –

जब किसी नदी आदि का जल पर्याप्त ऊँचाई से लम्बवत् रूप मे नीचे गिरता है तो उसे जलप्रपात कहते हैं।

→ जहाँ जलप्रपात की स्थिति होती है। वहाँ घाटी की समोच्च रेखाओं को आवश्यक संख्या में एक-दूसरे में मिला देते हैं।

* **रिया तट** :-

समुद्र में मिलने से पूर्व नदी का जल विभक्त होकर कई घाटियों मे बहने लगता है।
जब ये घाटियाँ अपरदित होकर समुद्र तल से नीची हो जाती हैं तो इनमे समुद्र का जल भर जाता है और रिया तट बन जाते हैं।
फियोर्ड की तुलना मे रिया छोटा होता है तथा उसमे फियोर्ड की अपेक्षा गहराई संबंधी असमानताएँ कम होती है।

→ रिया तट की समोच्च रेखाएँ अपेक्षाकृत दूर-दूर तथा कम समोच्च रेखांतराल पर बनाई जाती हैं।

जलप्रपात व रियातट
(Waterfall & Ria Coast)

* **जलप्रपात** —
जब किसी नदी आदि का जल पर्याप्त ऊँचाई से लम्बवत् रूप मे नीचे गिरता है तो उसे जलप्रपात कहते हैं।

→ जहाँ जलप्रपात की स्थिति होती है। वहाँ घाटी की समोच्च रेखाओं को आवश्यक संरचना में एक - दूसरे में मिला देते हैं।

* **रिया तट** :-
समुद्र में मिलने से पूर्व नदी का जल विभक्त होकर कई घाटियों मे बहने लगता है।
जब ये घाटियाँ अपरदित होकर समुद्र तल से नीची हो जाती हैं तो इनमे समुद्र का जल भर जाता है और रिया तट बन जाते हैं।
फियोर्ड की तुलना मे रिया छोटा होता है तथा उसमे फियोर्ड की अपेक्षा गहराई संबंधी असमानताएँ कम होती है।

→ रिया तट की समोच्च रेखाएँ अपेक्षाकृत दूर - दूर तथा कम समोच्च रेखांतराल पर बनाई जाती हैं।

WATER FALL

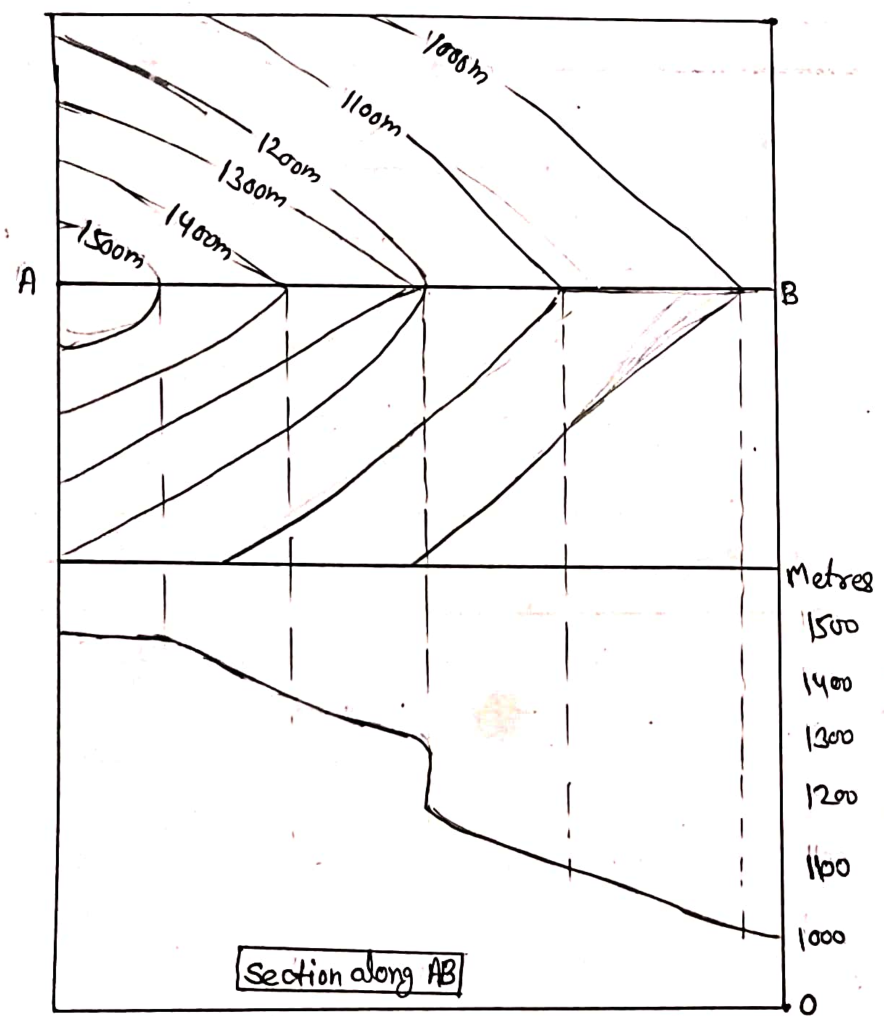

RIA COAST

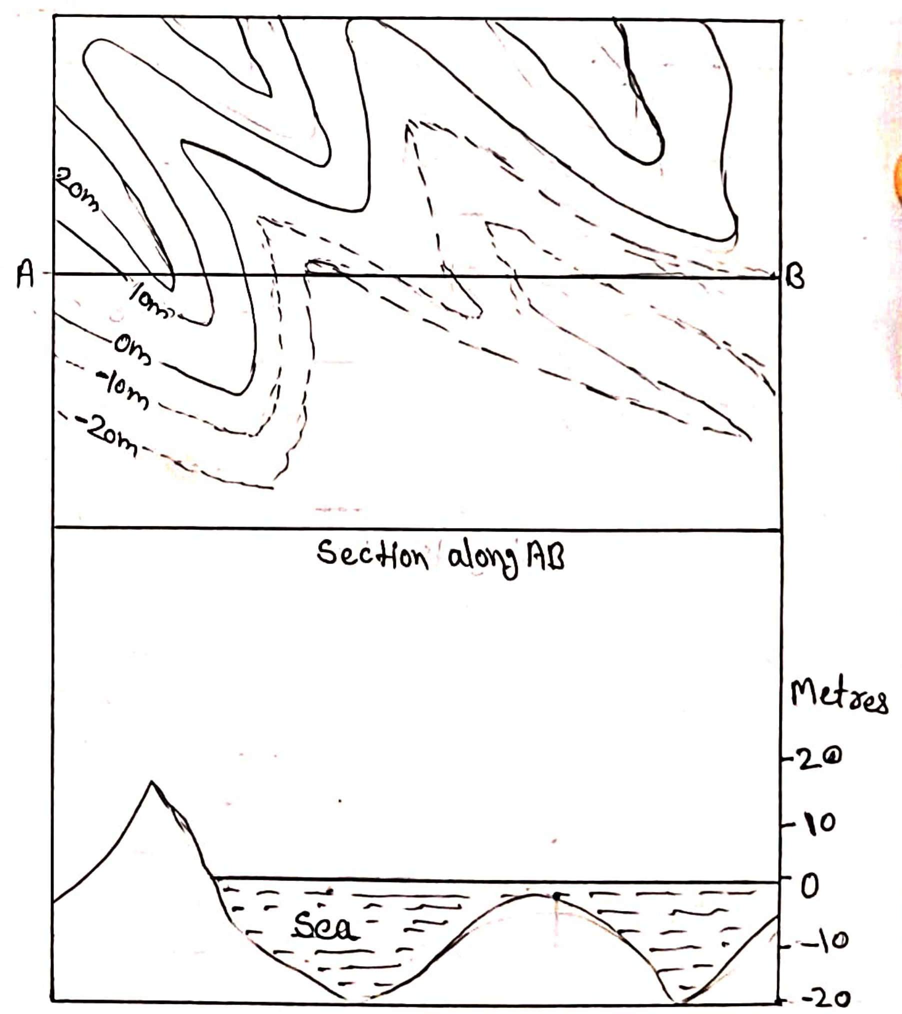

Page No. : ______ Date: ______

WATER FALL

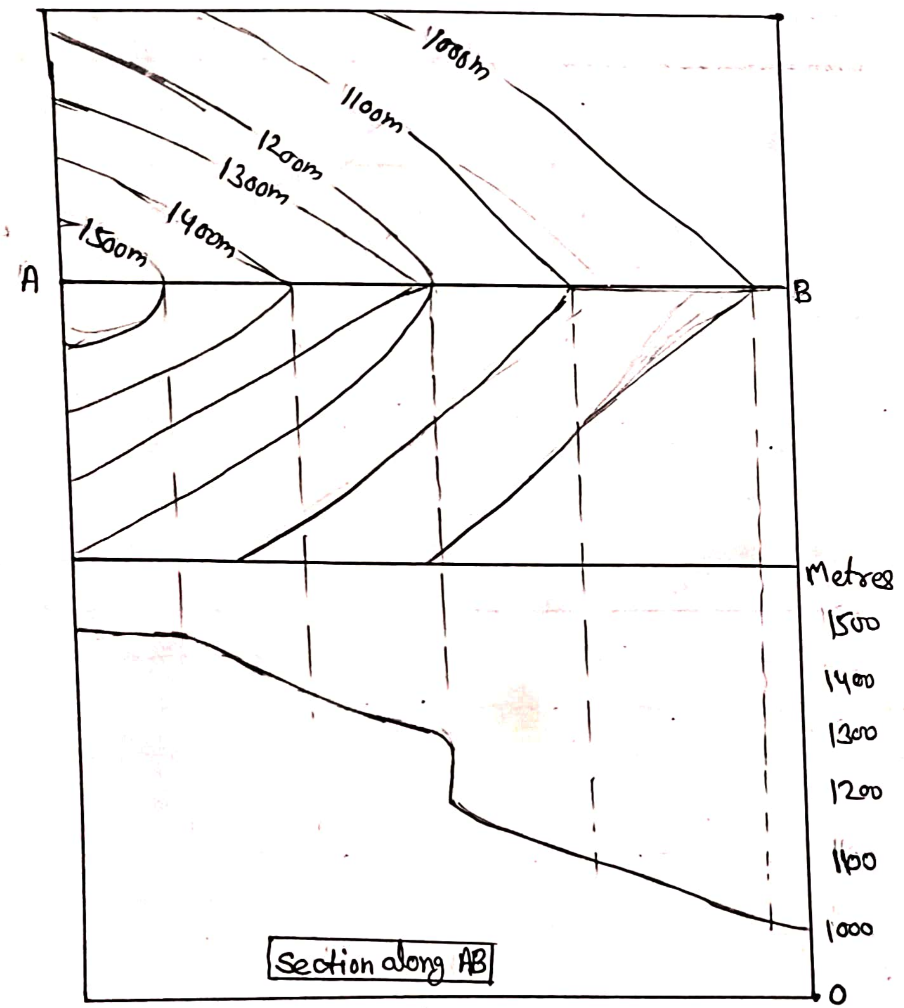

RIA COAST

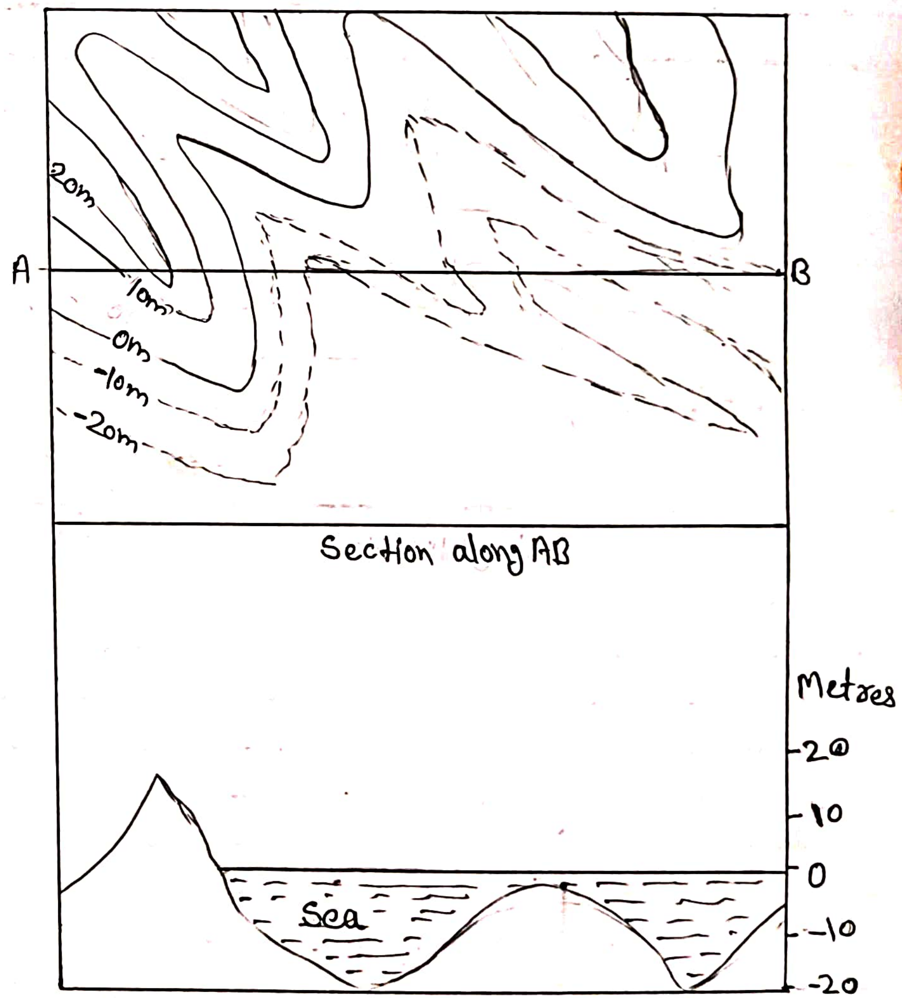

कटक व फियोर्ड तट
(Ridge & Fiord Coast)

* **कटक :-** अपेक्षाकृत लम्बी एवं संकीर्ण पहाड़ी अथवा पहाड़ियों की श्रृंखला को कटक कहते हैं।

→ इसके किनारे प्रायः तेज ढाल वाले होते हैं। इस उच्चावच लक्षण को दीर्घवृत्ताकार (elliptical) समोच्च रेखाओं के द्वारा प्रदर्शित किया जाता है।

* **फियोर्ड तट :-** फियोर्ड तटों का निर्माण हिमनदीय क्रिया के फलस्वरूप होता है। जब कोई हिमनद अपनी घाटी को समुद्र तट तक विस्तीर्ण कर लेता है। तथा घाटी का कुछ भाग समुद्र के जल में डूब जाता है तो फियोर्ड तट बन जाते हैं। नार्वे का समुद्री तट इसका ~~अच्छ~~ अच्छा उदाहरण है।

— फियोर्ड तट पर हिमनद की ~~छ~~ छोटी – छोटी U– रूप की जल में डूबी हुई घाटियों को सरलता पूर्वक पहचाना जा सकता है।

RIDGE

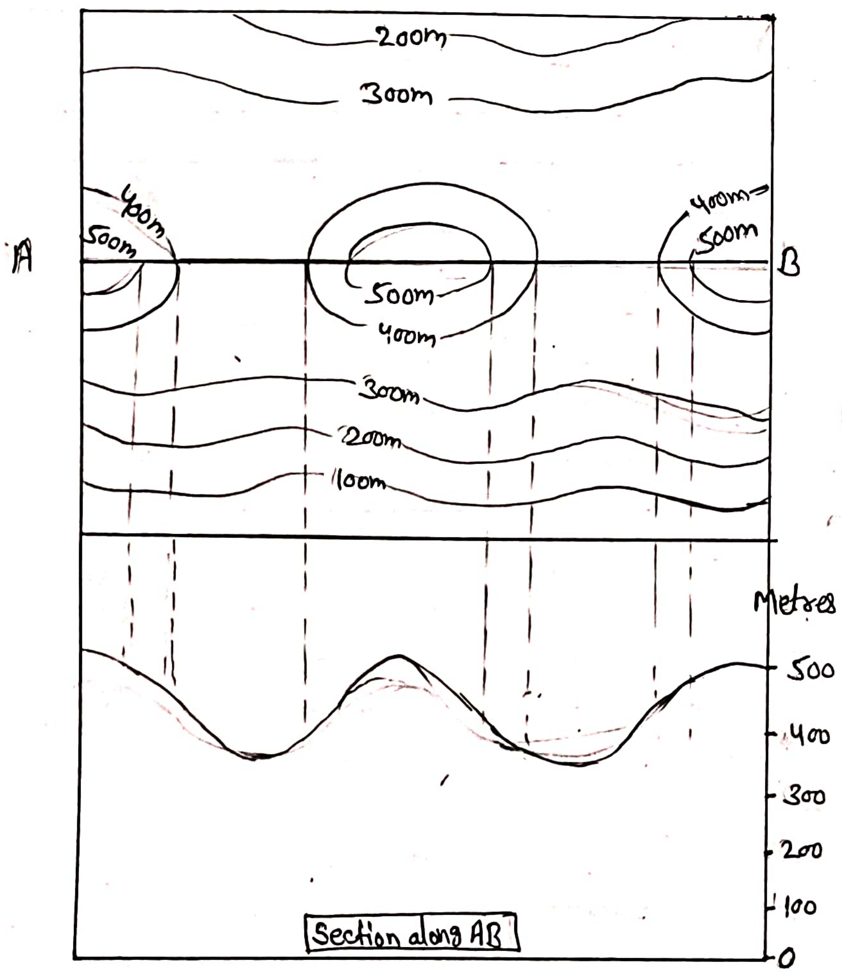

FIORD COAST

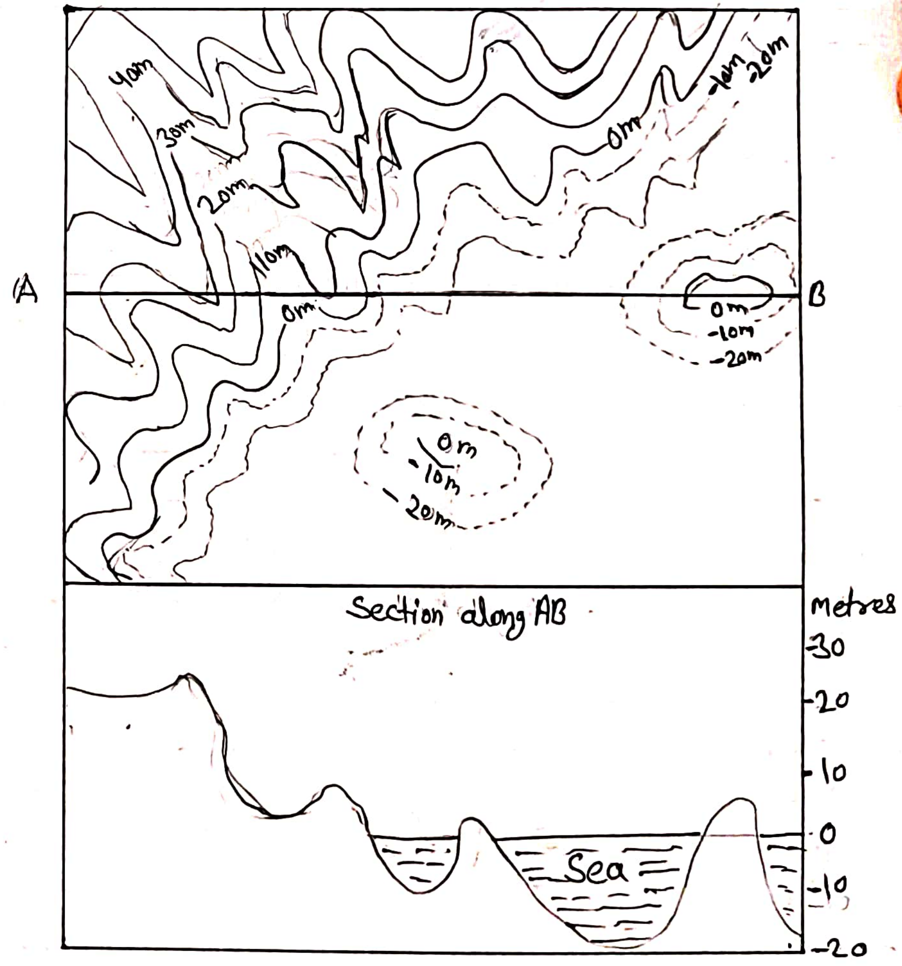

परिच्छेदिका (Profile)

→ प्राय: 'परिच्छेदिका' तथा 'अनुभाग' शब्दो का समान अर्थो मे प्रयोग किया जाता है परंतु इनमे थोड़ा अंतर होता है।

→ अनुभाग का शाब्दिक अर्थ काट या काट द्वारा उत्पन्न नग्न सतह होता है। इसके विपरित काट द्वारा उत्पन्न सतह की धरातल पर रूपरेखा परिच्छेदिका कहलाती है।

* परिच्छेदिकाओ के प्रकार

किसी स्थल रूप मे स्थान - स्थान पर होने वाले ढाल के परिवर्तनो को केवल एक परिच्छेदिका के द्वारा स्पष्ट नहीं किया जा सकता। अत: ढाल परिवर्तन के समुचित निरूपण के लिये उस स्थल रूप के समोच्च रेखी मानचित्र पर समान दूरी के अंतर पर कुछ सरल एवं परस्पर समान्तर रेखाएँ खींचकर, प्रत्येक रेखा के अनुसार अलग - अलग परिच्छेदिकाएँ बनाना आवश्यक होता है। अलग - अलग रेखाओ के सहारे खींची गई परिच्छेदिकाओ को चार रूपों या प्रकारों मे प्रस्तुत किया जा सकता है।

(i) संक्रम परिच्छेदिकाएँ
(ii) अध्यारोपित परिच्छेदिकाएँ
(iii) प्रक्षिप्त परिच्छेदिकाएँ
(iv) मिश्र परिच्छेदिकाएँ

Page No. : ____________ Date: ____________

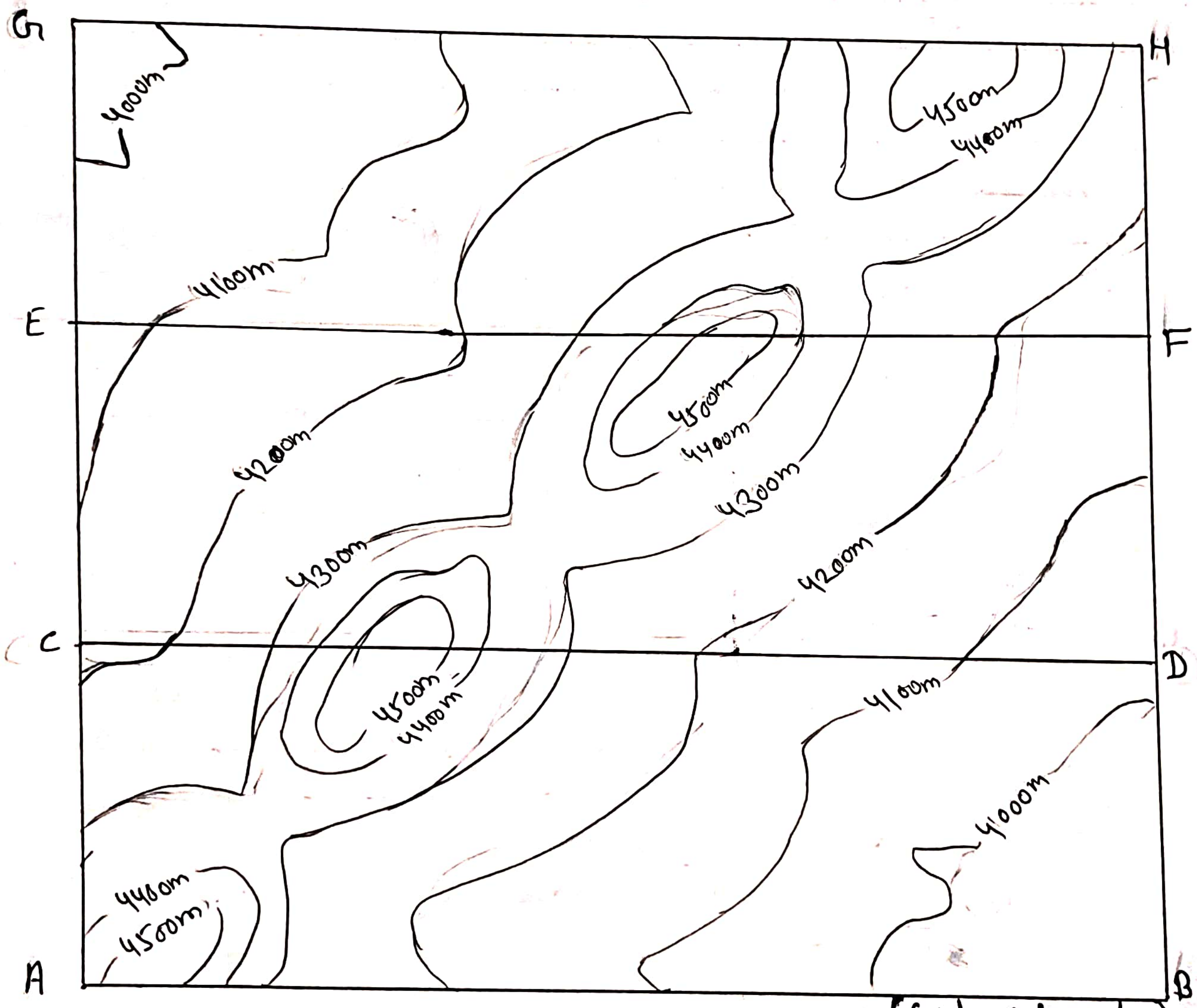

(Contours in metres)

संक्रम परिच्छेदिकाएँ
(Serial Profiles)

→ यदि किसी समोच्च रेखी मानचित्र पर विभिन्न सरल रेखाओ के सहारे खींची गई परिच्छेदिकाओ को अलग - अलग चौखटो मे क्रमवार ढंग से व्यवस्थित कर दिया जाये तो परिच्छेदिकाओ की इस श्रृंखला को संक्रम परिच्छेदिकाएँ कहा जायेगा।

→ संक्रम परिच्छेदिकाएँ बनाने के लिये समोच्च रेखी मानचित्र पर आवश्यक संख्या मे कुछ समान्तर रेखाएँ खींच लेते हैं।

→ इसके पश्चात् इन अलग - अलग सरल रेखाओ के अनुसार बनाई गई परिच्छेदिकाओ को एक श्रृंखला के रूप मे क्रमानुसार ढंग से व्यवस्थित कर देते हैं।

→ पहचान के लिये प्रत्येक परिच्छेदिका पर संबन्धित सरल रेखा का नाम जैसे AB, CD अथवा EF आदि लिख देना चाहिए।

Page No. : ______ Date: ______

SERIAL PROFILES

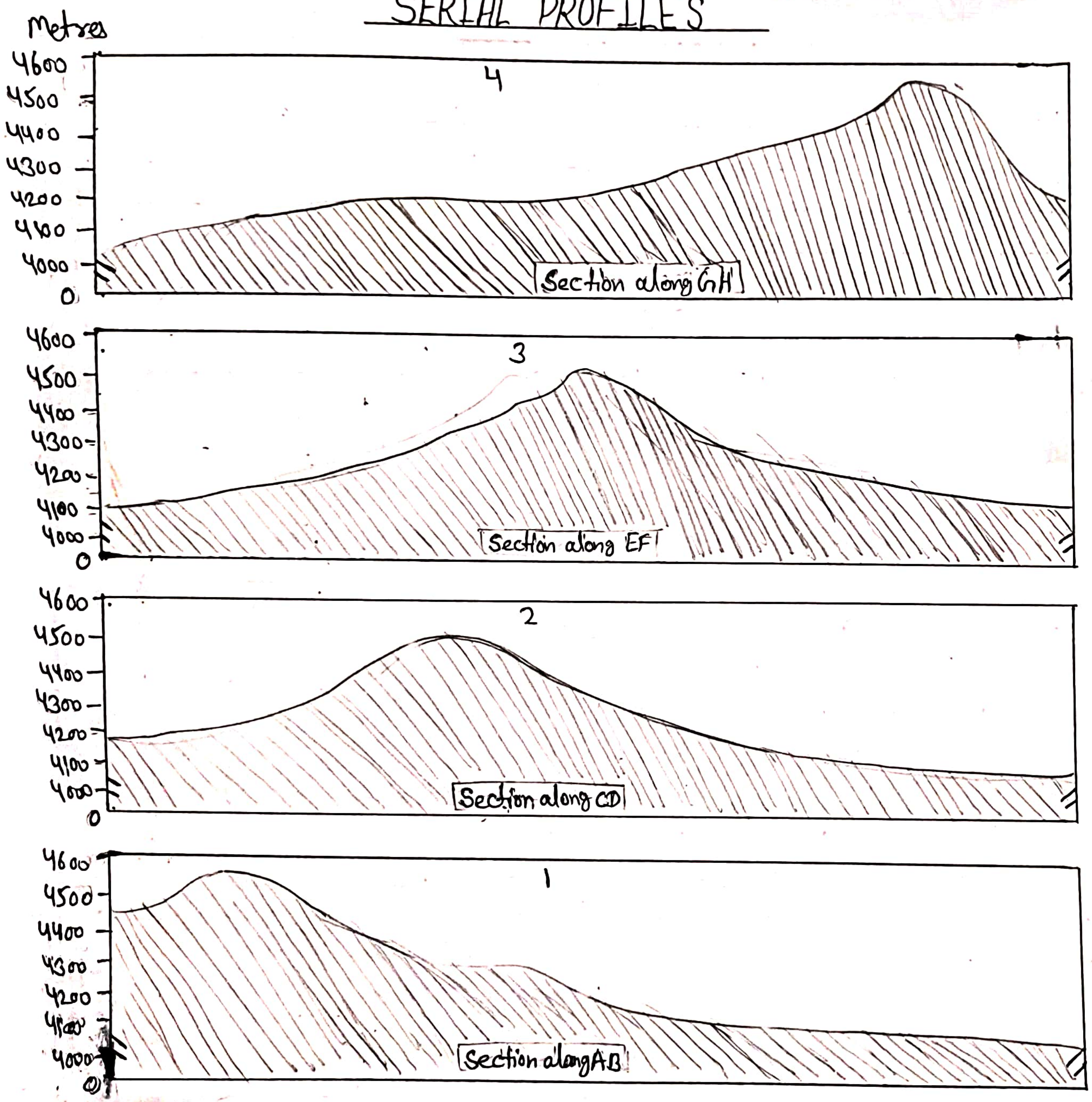

अध्यारोपित, प्रक्षिप्त, मिश्र परिच्छेदिकाएँ

*** अध्यारोपित परिच्छेदिकाएँ –**

यदि समोच्च रेखी मानचित्र पर विभिन्न सरल रेखाओ के अनुसार प्राप्त परिच्छेदिकाओ को अलग - अलग बनाने के बजाय किसी चौखटे में एक ही आधार रेखा पर खींच दिया जाये तो ये परिच्छेदिकाएँ अध्यारोपित कही जायेंगी।

*** प्रक्षिप्त परिच्छेदिकाएँ :–**

प्रक्षिप्त परिच्छेदिकाएँ बनाने के लिये पहले अध्यारोपित परिच्छेदिकाएँ खींची जाती है। और उसके पश्चात् अध्यारोपित परिच्छेदिकाओ मे प्रत्येक परिच्छेदिका के दिखलाई न देने वाले निचले भाग मिटा दिये जाते है। दूसरे शब्दो में, प्रक्षिप्त परिच्छेदिकाओ में किसी परिच्छेदिका के वे भाग, जो नीचे होने के कारण पहले खींची गई परिच्छेदिकाओ के पीछे छुप जाते है, नहीं बनाये जाते।

उदाहरणार्थ चित्र 7.14 B में क्रमांक 1 की परिच्छेदिका को पुरा दिखलाया गया है तथा क्रमांक 2 की परिच्छेदिका के उन भागो को छोड़ दिया गया है जो क्रमांक 1 की परिच्छेदिका से नीचे है इसी प्रकार तीसरे व चौथे क्रमांक वाली परिच्छेदिकाओ के ~~क्रमांक~~, क्रमशः पहली व दूसरी तथा पहली, दूसरी व तीसरी परिच्छेदिकाओ से नीचे भागो मे छोड़ दिया गया है।

*** मिश्र परिच्छेदिकाएँ :–**

मिश्र परिच्छेदिकाओ के द्वारा किसी स्थल रूप की क्षितिज रेखा दिखलाई जाती है। अतः इन परिच्छेदिकाओ को बनाने के लिये अध्यारोपित परिच्छेदिकाओ मे सबसे ऊँचे भागो को दिखलाने वाली रेखा को छोड़कर परिच्छेदिकाओ के शेष भाग मिटा दिये जाते है।

Page No.: ______ Date: ______

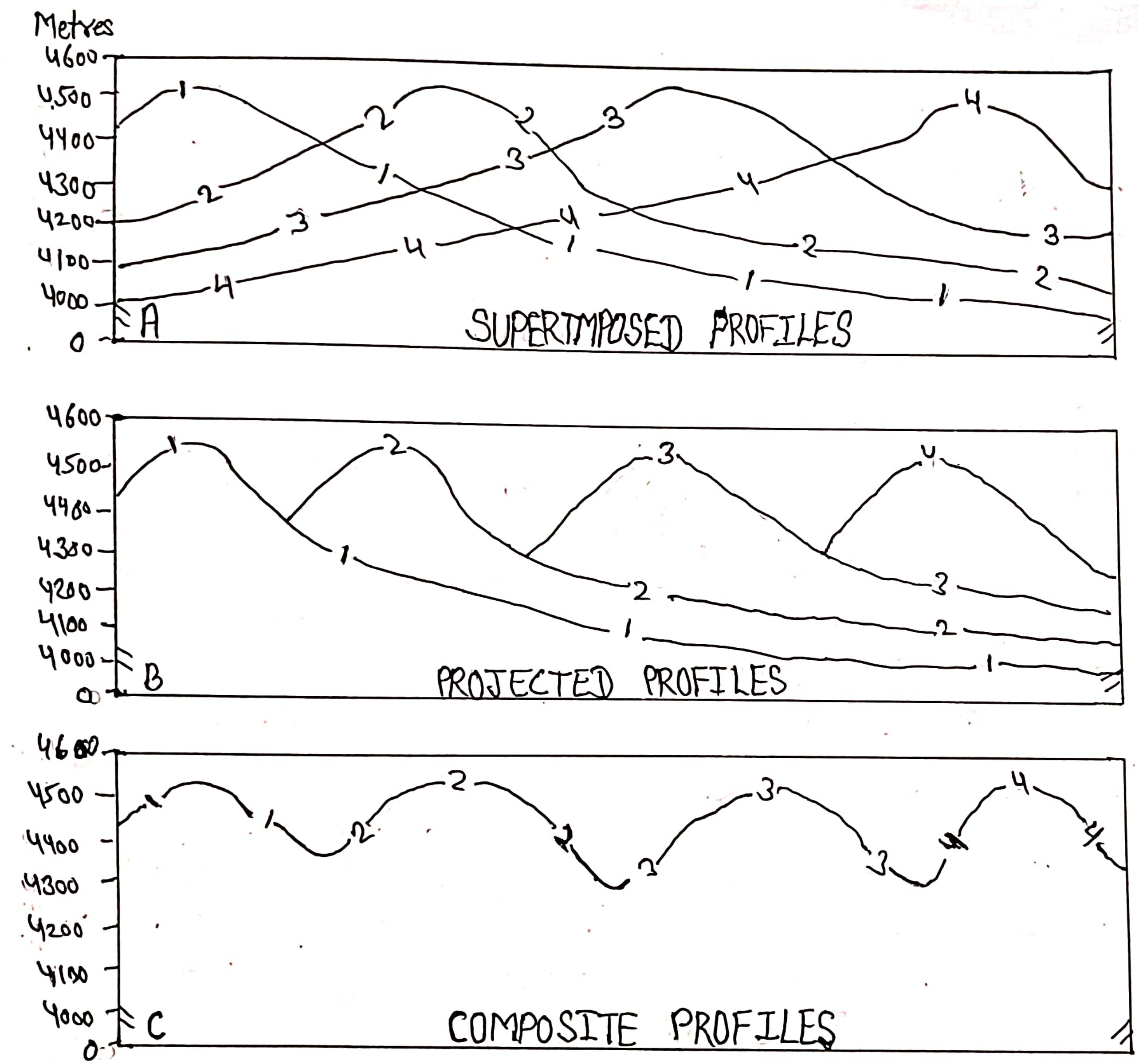

Metres
4600
4500
4400
4300
4200
4100
4000
0
A
SUPERIMPOSED PROFILES
B
PROJECTED PROFILES
C
COMPOSITE PROFILES